वैश्वीकरण के दौर में रामायण के पुरुषार्थ-चतुष्टय की समीक्षा

विकास सिंह[184]

कूट शब्द: रामायण, पुरुषार्थ, पुरुषार्थ-चतुष्टय, धर्म, अर्थ, कर्म, मोक्ष, वैश्वीकरण, सामाजीकरण, संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण, सदाचार, धर्मनिरपेक्ष।

सारांश : इस शोधपत्र का उद्देश्य भारतीय जनमानस द्वारा समादृत पुरुषार्थ-चतुष्टय के सिद्धान्त का विश्लेषण आदिग्रन्थ रामायण के विशेष सन्दर्भ में तथा साथ ही भारतीय परम्परा द्वारा स्वीकृत पुरुषार्थ-चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के सिद्धान्त का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में व्याख्या करना अभीष्ट है। धर्म सामाजिक व्यवस्था का नियामक होता है। भारतीय समाज धर्म से ही नियंत्रित होता है। रामायण में कहा गया है – "धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्। धर्मसंश्रितमप्येतत् पितुर्वचनमुत्तमम्॥" अर्थ से तात्पर्य उन समस्त आवश्यकताओं तथा साधनों से है जिनके माध्यम से मानव भौतिक सुख, धन, ऐश्वर्य एवं शक्ति इत्यादि प्राप्त करता है। अयोध्याकाण्ड में वनवासी राम भरत को कुशलक्षेम के बहाने राजनीति तथा अर्थनीति का उपदेश सुनाते हैं। मनुष्य की सहज इच्छायें एवं प्रवृत्तियाँ ही काम कहलाती हैं। रामायण में धर्मसम्मत काम का वर्णन प्राप्त होता है। मानव जीवन का अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष है, जिसका आशय आवागमन से मुक्ति माना जाता है।

वैश्वीकरण के दौर में पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा की पुनर्व्याख्या आवश्यक है। जहाँ धर्म मानव को नैतिकता का पाठ पढ़ाता था आज नैतिकता के मायने बदल रहे हैं। जहाँ प्राचीनकाल में भारतीय दृष्टिकोण अर्थ को सामाजिक दायित्वों के निर्वाह का साधन रूप स्वीकार करता था, वहीं आज यह सम्पन्नता तथा समृद्धता का आधार बन गया है। प्राचीन काल में जहाँ इसका आशय संतानोत्पत्ति के लिये गृहस्थों के लिये एक कर्त्तव्यमात्र से लिया जाता था। मोक्ष का सिद्धान्त केवल मात्र विश्वविद्यालयी स्तर पर बहस का विषय बनकर रह गया है।

जब वैश्विक धरातल पर विभिन्न मानव सभ्यतायें जन्म ले रहीं थी तब भारत देश में एक उच्च स्तरीय आदर्शों से लिपटी हुई संस्कृति अपना परचम लहरा रही थी। वैदिक युग से पूर्व ही यह भारतीय संस्कृति विश्व के साथ व्यापार-वाणिज्य से जुड़ी तथा परवर्ती काल में इसने धम्मप्रचार के माध्यम से महाकरुणा तथा अत्त दीपो भव के सिद्धान्तो को विश्व विश्रुत किया। भारतीय संस्कृति की आधुनिक काल में प्रवेश से पूर्व परम्परागत सामाजिक विचारों की दीर्घ परम्परा विद्यमान थी। डॉ. योगेन्द्र सिंह ने भारतीय सामाजिक मूल्यों को चार भागों सोपानक्रम, समग्रता, निरन्तरता एवं पारलौकिकता में वर्गीकृत किया है, जो प्राचीन भारतीय सामाजिक संरचना के अन्य तत्त्वों के साथ गुंथे हुए थे।[185] सोपानक्रम से आशय जाति व्यवस्था तथा उप-जाति स्तरीकरण के साथ-साथ मानव प्रकृति, आश्रम व्यवस्था तथा धर्म की अवधारणाओं से है। समग्रता से आशय व्यक्ति तथा समूह के मध्य के सम्बन्ध है, जिसमें कर्तव्य तथा अधिकारों के मामले में व्यक्ति समूह में समाहित है। यहाँ सामूहिकता को प्राथमिकता दी जाती है व्यक्ति को नहीं। सामाजिक व्यवस्था में सामुदायिकता को निरन्तरता की मूल्य व्यवस्था के द्वारा सम्पुष्ट किया गया है,

[184] पीएच.डी., विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 110067, ईमेल: Vikas.sing.gautam@gmail.com, मोबाईल: +91-9711570933

[185] *भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण*, पृ. 327.

जिसे कर्म के सिद्धान्त, आत्मा के आवागमन तथा परिवर्तन के चक्रीय दृष्टिकोण से जाना जा सकता है। पारलौकिकता से पारम्परिक नियमों को वैधता तथा तार्किकता प्राप्त होती है।[186]

भारतीय संतानों की विविधताओं ने भारत देश में एक वैविध्यपूर्ण अद्वितीय समाज की संरचना को जन्म दिया है। भौगोलिक बनावट, जलवायु, जनसंख्या, प्रजाति, धर्म, इतिहास, राजनीति, भाषा, संस्कृति एवं समाज व्यवस्था की दृष्टि से भारत में अनेक विषमताओं के विद्यमान होते हुए भी यहाँ के लोगों में परस्पर एकता के दर्शन होते हैं। जब वैश्विक धरातल पर विभिन्न मानव सभ्यतायें जन्म ले रहीं थी तब भारत देश में एक उच्च स्तरीय आदर्शों से लिपटी हुई संस्कृति अपना परचम लहरा रही थी। भारतीय जीवन-परम्परा में पुरुषार्थ-चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के सिद्धान्त का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तू का मानना था कि मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह जन्म से मरण तक समाज में रहता है। समाज से रहित मानव पशुवत है। सामाजिक सम्पर्क के कारण ही व्यक्ति समाज के रीति-रिवाजों, प्रथाओं, मूल्यों, विश्वासों, संस्कृति एवं सामाजिक गुणों को सीखकर उन्हें ग्रहण करता है। इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं। समाजीकरण द्वारा बच्चा सामाजिक प्रतिमानों को सीखकर उनके अनुरूप आचरण करता है, जिससे समाज में नियंत्रण बना रहता है। प्राचीन भारतीय जनमानस ने समाज के समस्त मूल्यों का संकलन चार भागों में किया था जो क्रमशः हैं- धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। इन्हें संयुक्त रूप में पुरुषार्थ कहते हैं। पुरुषार्थ का तात्पर्य मानव जीवन के प्रयोजन से है।[187] भारतीय दृष्टिकोण ने धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को जीवन के चार प्रमुख लक्ष्य अर्थात् प्रयोजन स्वीकार किया है।

धर्म :- धर्म[188] धृ धातु से धारण अर्थ में निष्पन्न होता है जिसका आशय है मनुष्य तथा समाज के अस्तित्व को कायम रखना। महाभारत में उल्लेख मिलता है कि धर्म सभी जीवों को धारण करता है, अतः धर्म कहलाता है।[189] यह सामाजिक व्यवस्था का नियामक होता है। धर्म से आशय सदाचार, सामाजिक कर्त्तव्य तथा व्यक्तिगत गुणों के समावेश से है। कणाद ने धर्म से आशय लौकिक तथा पारलौकिक हितों की सिद्धि करने वाले माध्यम से लिया है।[190] स्मृतिकार मनु ने वेद, स्मृति, सदाचार तथा मन की प्रसन्नता को धर्म का मूल स्रोत माना है।[191] धर्म मानव के कर्त्तव्यों का अवबोधक है। वह उसे प्रत्येक पल किसी न किसी कर्म में प्रवृत्त रखता है। गीता में कृष्ण ने '**न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्** ' [192] कहकर कर्म के उद्योग पर बल दिया है।

सम्पूर्ण रामायण कर्त्तव्य पालन का ही संदेश देती है। अयोध्याकाण्ड में जब युवराज पद पर राम का राज्याभिषेक हो रहा होता है, तब मंथरा के बहकावे में आकर केकई दो वरदानों के रूप में राम को 14 वर्ष का वनवास तथा भरत के लिये अयोध्या का राज मांगती हैं[193] तब 21वें सर्ग में क्रोधित लक्ष्मण को शान्त करते हुए राम कहते हैं कि वे पिता दशरथ की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं।[194] वे अपने वंश में

---

[186] वही, पृ. 327

[187] पुरुषस्य अर्थः/पुरुषस्य प्रयोजनम्। *शब्दकल्पद्रुमः*, पृ. 196

[188] धर्मः ध्रियते तिष्ठति वर्तते यः स धर्मः। *A Primer of Navya Nyāya Language and Methodology (Navya Nyāya Bhāṣā Pradīpa* of MM Mahesh Chandra Nyayaratna), p. 21.

[189] धारणाद् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः। यत्स्याद् धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः॥ *महाभारत,* कर्ण पर्व, 68.59

[190] यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। *वैशेषिक सूत्र,* 1.1.2

[191] वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ *मनुस्मृतिः*, 2.12

[192] *श्रीमद्भगवद्गीता,* 3.5

[193] *वाल्मीकीरामायण*, 2/11/24

[194] वही, 2/21/30

उत्पन्न कण्डु[195], सगर के पुत्रों[196] तथा जमदग्नि पुत्र परशुराम[197] इत्यादि के उदाहरणों के द्वारा बतलाते हैं कि पिता की आज्ञा का पालन करने वाला कोई भी पुरुष धर्म से भ्रष्ट नहीं होता।[198] धर्म के लिये रामायण में वाल्मीकि ने राम के मुख से कहलवाया है-

धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्।
धर्मसंश्रितमप्येतत् पितुर्वचनमुत्तमम्॥[199]

अर्थात् संसार में धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है। धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है। पिताजी का यह वचन भी धर्म के आश्रित होने के कारण परम उत्तम है। धर्म व्यक्ति को नियंत्रित करता है तथा समाज व परिवार के प्रति उसके कर्त्तव्यों को निष्ठापूर्वक पालन करने के लिये प्रोत्साहित करता है। धर्म का पर्याय मनु ने सदाचार को स्वीकार किया है।[200] सदाचार देश तथा काल के अनुसार परिवर्तित होता है। रामायण का अध्ययन करने पर बहुपत्नी के उदाहरण तो ज्ञात होते हैं किन्तु बहुपति का सिद्धान्त नहीं मिलता। जहाँ एक ओर दशरथ की एक से अधिक रानियों के उल्लेख रामायण में मिलते हैं, वहीं राम एकपत्नीव्रती हैं। शूपर्णखा के विवाह प्रस्ताव[201] को भी राम यह कहते हुए अस्वीकार कर देते हैं कि उनका तो विवाह हो चुका हैं। उनकी पत्नी सीता विद्यमान है। तुम जैसी स्त्रियों कि लिये तो सौतन का रहना अत्यन्त दुःखदायी होगा।[202]

रामायण में द्विविध धर्म का दर्शन होता है। एक तरफ रामायण में राम में वे सभी गुण जैसे गुणवान्, वीर्यवान्, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यव्रती, चरित्रवान्, हितैषी, विद्वान् विद्यमान हैं, जो वाल्मीकी को नारद ने बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में गिनाये हैं[203] दूसरी तरफ राम के द्वारा शम्बूक वध तथा सीता निष्कासन की कथा रामायणकालीन धर्म पर प्रश्नचिन्ह लगाती हैं, जो आधुनिक भारतीय चिन्तकों विशेषकर पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायंकर, डॉ. भीमराव अम्बेड़कर प्रभृति विद्वानों के द्वारा आलोचना का आधार बनी।

समग्र रामायण में पिता के पुत्र मोह व क्षत्रिय धर्म के बीच जो संघर्ष होता है, उसी का फल है कि राम पितृ-धर्म की रक्षा के लिये वनवास स्वीकार कर लेता है। पारिवारिक व सामाजिक संस्कृति के बीच संघर्ष राम के जीवन का अभिन्न अंग है।

रामायण में पत्नी के पतिधर्म का उदाहरण सुन्दरकाण्ड में प्रकट होता है, जब सीता यह कहती है, "इस निशाचर रावण से प्रेम की बात तो दूर रही, मैं तो इसे अपने बांये पैर से भी नहीं छू सकती।[204]" युद्धकाण्ड में रावण की मृत्यु के अनन्तर राम ने सीता के चरित्र की विशुद्धि सामान्य जनता के सामने प्रकट करने के लिये अनेक कटुवचन कहे।[205] जबाव में सीता ने मर्मस्पर्शी उत्तर दिया, "मेरे चरित्र पर लांछन लगाना

---

[195] वही, 2/21/31

[196] वही, 2/21/32

[197] वही, 2/21/33

[198] वही, 2/21/37

[199] वही, 2/21/41

[200] *मनुस्मृतिः*, 2.12

[201] *वाल्मीकीरामायण*, 3/27/26

[202] वही, 3/28/2

[203] इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः। नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी॥
बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः। विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः॥ वही, 1/1/8-9

[204] वही, 5/26/10

[205] वही, 6/115/15-24

कथमपि संभव नहीं है। आपने मेरे सबल पक्ष (पतिव्रतत्व) को पीछे ढकेल, मेरे स्त्रीत्व को ही आगे किया है।[206]

इस तरह रामायण के अध्ययन से पता चलता है कि तत्कालीन भारतीय समाज में धर्म न केवल व्यवस्था का नियामक था, अपितु सामान्य जन-जीवन का नियमन भी धर्म से ही होता था।

अर्थ :- द्वितीय पुरुषार्थ है- अर्थ। इसका संकुचित अर्थ धन अथवा संपत्ति से लगाया जाता है किन्तु प्राचीन भारतीयों की दृष्टि में यह एक व्यापक शब्द था जिसका तात्पर्य उन समस्त आवश्यकताओं और साधनों से था जिनके माध्यम से मनुष्य भौतिक सुखों एवं ऐश्वर्य-धन, शक्ति आदि को प्राप्त करता है। इसके अन्तर्गत वार्ता व राजनीति को भी समाहित किया जाता था। कौटिल्य ने भी त्रिवर्ग धर्म, अर्थ व काम पर ही विचार व्यक्त करते हुए इन तीनों में पारस्परिक सम्बन्ध को स्वीकार किया है तथा अर्थ की प्रधानता को इंगित करते हुए धर्म व काम को अर्थ पर निर्भर माना है।[207] इसलिए त्रिवर्ग की समुचित उपलब्धि के लिए अर्थ की अनिवार्यता को स्वीकार किया है।

बालकाण्ड के 6वें सर्ग में राजा दशरथ के शासन काल की अयोध्या का बहुत ही भव्य वर्णन कवि ने किया है। साथ ही तत्कालीन अर्थव्यवस्था का परिचय दिया है। तत्कालीन समय में अपवित्र अन्न भोजक, दान न देनेवाला तथा असंयमी अयोध्या में कोई भी दिखाई नहीं देता था। निष्क, कड़ारहित व्यक्ति तथा अग्निहोत्र व यज्ञ न करने वाले व्यक्ति दिखाई नहीं देते हैं।[208]

अयोध्याकाण्ड में जब वनवासी राम से मिलने भरत जाते हैं तो राम भरत को कुशलक्षेम के बहाने राजनीति का उपदेश देते हुए कहते हैं कि वह गुरूजनों तथा ब्राह्मणजनों का सम्मान करता है कि नहीं। वह गुप्त मंत्रणा तो ढ़ग से करता है। अपने पास विद्वानों को ही रखता है। नियुक्ति, पदमुक्ति सम्यकतया करता है, साम-दामादि उपायों का प्रयोग कुशल राजनीति के लिये ही करता है। युद्ध के लिये तैयार रहता है । सैनिकों को प्रशिक्षण देता है। नास्तिक ब्राह्मणों को दूर रखते हुए सीमा की सुरक्षा बरकरार है? कोष सम्यक् है, राजा के 14 दोषों पर उसने विजय प्राप्त कर ली है। अंत में पूछते हैं कि उसने धर्मानुसार दण्ड को धारण किया है अथवा नहीं।[209]

किष्किन्धाकाण्ड के बाद युद्धकाण्ड में जब विभीषण राम की शरण में आते हैं तो राम अपने मित्र सुग्रीव, सम्पति, हनुमानादियों के साथ मंत्रणा कर उसे अपनाते हैं।[210] अयोध्याकाण्ड में प्रशासन के 18 विभागों का नाम दिया गया है जिनमें मन्त्री, पुरोहित, युवराज, चमूपति, द्वारपाल इत्यादि हैं।[211] इन पदों को तीर्थ कहा जाता था। वाल्मीकी ने रामायण में लिखा है-

क्षत्रं ब्रह्ममुखं चासीद् वैश्याः क्षत्रमनुव्रताः।
शूद्राः स्वकर्मनिरस्तास्त्रीन् वर्णानुपचारिणः॥[212]

अर्थात् क्षत्रिय ब्राह्मणों का मुख जोहते थे। अर्थात् जैसा ब्राह्मणजन उनको उपदेशित करते थे, वे वैसे ही चलते थे। वैश्य क्षत्रियों की आज्ञा का पालन करते थे और शूद्र अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए प्रथम तीन वर्णों की सेवा किया करता था।

---

206 वही, 6/116/14-16

207 अर्थ एव प्रधान इति कौटिल्यः अर्थमूलौ हि धर्मकामाविति। *अर्थशास्त्र,* 1/3/6

208 *वाल्मीकीरामायण*, 1/6/11-15

209 वही, 2/100/11-76

210 वही, 6/17/7-67

211 वही, 2/100/36

212 *वाल्मीकीरामायण*, 1/6/19

काम :- मानव जीवन का तृतीय पुरुषार्थ **काम** को माना जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ इन्द्रिय सुख अथवा वासना से लिया जाता है। किन्तु व्यापक अर्थ में मानव की सहज इच्छायें एवं प्रवृत्तियाँ ही काम कहलाती हैं। महाभारत के अनुसार काम मन तथा हृदय का वह सुख है जो इन्द्रियों के विषयों से संयुक्त होने पर निःसृत होता है।[213] भारत में धर्मशास्त्रकारों ने धर्म से युक्त काम के आचरण पर बल दिया है। काम सौन्दर्य और सृजन वृत्ति का बोधक है। काम सभी प्राणियों में पाया जाता है और यह समस्त जीवों की सृष्टि करता है। शरीर के स्वस्थ और संतुलित विकास के लिये जीवन में काम की संतुष्टि आवश्यक है। समाज और सृष्टि की निरन्तरता के लिये भी काम की आवश्यक है।[214]

रामायण के बालकाण्ड के 77वें सर्ग में राम का सीता के प्रति प्रेम कवि ने इन शब्दों मे अभिव्यक्त किया है-

तया स राजर्षिसुतोऽभिकामया, समेयिवानुत्तमराजकन्यया।

अतीवः रामं शुशुभे मुदान्वितो, विभुः श्रिया विष्णुरिवामरेश्वरः॥[215]

अर्थात् श्रेष्ठ राजकुमारी सीता राम की ही कामना रखती हैं और राम भी एकमात्र उन्हीं को चाहते हैं। जैसे लक्ष्मी के साथ देवेश्वर विष्णु की शोभा होती है, उसी प्रकार सीता के साथ राम भी प्रसन्न रहकर शोभा पाने लगे।

राम सदा सीता के हृदय में विराजते हैं तथा मनस्वी राम का मन भी सीता में ही अनुरक्त रहता है। राम ने सीता के साथ कई ऋतुओं तक विहार किया।[216] जब राम सीता को वन में न चलने को कहते हैं तो सीता औचित्यपूर्वक कहती है कि पतिव्रता स्त्री अपने पति से वियुक्त होने पर जीवित नहीं रहती। यदि राम उन्हें वन में नहीं ले जायेंगे तो वह आग में कूदकर अपने प्राण दे देगी।[217]

अयोध्याकाण्ड के 119वें सर्ग में अनुसूया द्वारा प्रदत्त आभूषणों से सजी सीता को देखकर राम हर्षित हुए किन्तु मुनिवन भूमि होने के कारण काम को उद्वलित नहीं होने दिया। राम को अतीव प्रसन्नता हुई।[218] सीता की अग्निपरीक्षा के पश्चात् राम ने कहा कि यदि वह सीता की शुद्धि के विषय में परीक्षा न करता तो लोग उसे मूर्ख एवं कामी समझते।[219] उत्तरकाण्ड में पति से वियुक्त सीता के चरित्र के बारें में राम की राज्यसभा में महर्षि वाल्मीकि ने कहा कि सीता का आचरण सर्वथा शुद्ध है। पाप इसे छू भी नहीं सका है तथा यह पति को ही देवता स्वीकार करती है।[220]

रामायण में एक स्थान पर राम ने काम को निम्न बतलाया है। दशरथ को ही आक्षेप करते हुए राम कहते हैं कि अर्थ तथा धर्म का परित्यागकर करके जो केवल काम का ही अनुसरण करता है, वह दशरथ की भांति आपत्ति में पड़ जाते हैं।[221]

मोक्ष :- मानव जीवन का चौथा व अन्तिम पुरुषार्थ **मोक्ष** है। मोक्ष शब्द का अर्थ है- पुनर्जन्म तथा आवागमन चक्र से मुक्ति प्राप्त कर आत्मा का परमात्मा में विलय हो जाना। आत्मा अजर-अमर है, वह परमात्मा का

---

213 इन्द्रियाणां च पञ्चानाम् मनसो हृदयस्य च॥ विषये वर्तमानानां या प्रीतिरूपे जायते।
स काम इति मे बुद्धि कर्मणां फलमुत्तमम्॥ *महाभारत,* वनपर्व-37-38

214 *भारतीय समाज*, पृ. 52.

215 *वाल्मीकीरामायण*, 1/77/29

216 वही, 1/77/25

217 वही, 2/29/20-21

218 वही, 2/119/13

219 बालिशो बत कामात्मा रामो दशरथात्मजः। इति वक्ष्यति मां लोको जानकीमविशोध्य हि॥ वही, 6/118/14

220 इयं शुद्धसमाचारा अपापा पतिदेवता। लोकापवादभीतस्य प्रत्ययं तव दास्यति॥ वही, 7/96/23

221 अर्थधर्मौ परित्यज्य यः काममनुवर्तते। एवमापद्यते क्षिप्रं राजा दशरथो यथा। 2/53/13

अंश है, शरीर आत्मा के लिये बंधन का कारण है तथा संसार मायाजाल है इत्यादि तथ्यों को जब मनुष्य जान लेता है तो वह सांसारिक विषयों से अपना ध्यान हटाकर परमात्मा की ओर लगाता है।

अयोध्याकाण्ड में सुमन्त्र द्वारा महाराज दशरथ के संदेश पर राम जब पिता दशरथ के भवन की ओर जाते हैं तब राम के प्रियजनों के माध्यम से कवि वाल्मीकि ने कहलवाया है कि यदि वे राज्य पर प्रतिष्ठित हुए तो राम को पिता दशरथ के घर से निकलते हुए देख ले तो इहलौकिक भोग तथा परमार्थस्वरूप मोक्ष लेकर क्या करेंगे।[222]

रामायणाधारित इन चारों पुरुषार्थ की जब वैश्वीकरण के दौर में समीक्षा करना चाहते हैं, तो सर्वप्रथम वैश्वीकरण शब्द से परिचित होना अत्यावश्यक है। इसका शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपान्तरण की प्रक्रिया से है। वैश्वीकरण को एक ऐसी प्रक्रिया कहा जा सकता है, जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है।[223] वैश्वीकरण का उपयोग अधिकांशतः आर्थिक वैश्वीकरण के सन्दर्भ में किया जाता है, जिसका आशय है- व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, पूंजी प्रवाह, प्रवास, और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण।

नॉबेल पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने वैश्वीकरण पर कहा है -

"Global interaction, rather than insulated isolation, has been the basis of economic progress in the world. Trade, along with migration, communication, and dissemination of scientific and technical knowledge, has helped to break the dominance of rampant poverty and the pervasiveness of 'nasty, brutish, and short' lives that characterized the world. Yet, despite all the progress, life is still severely nasty, brutish, and short for a large part of the world population. The great rewards of globalized trade have come to some, but not to others.[224]"

वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारतीय समाज में संस्कृतीकरण तथा पश्चिमीकरण ये दो शब्द ज्यादा प्रचलन में आ गये हैं। संस्कृतीकरण से आशय श्रीनिवास ने एक ऐसी प्रक्रिया से माना है जिसके अन्तर्गत एक निम्न हिन्दू जाति, या जनजाति व अन्य समूह, प्रायः उच्च, द्विज जाति के अनुरूप अपनी प्रथाओं, रीति-रिवाजों, विचारधारा तथा जीवनशैली को परिवर्तित करते हैं।[225] भारतीय समाज और संस्कृति में 150 वर्ष से अधिक अंग्रेजी शासन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए परिवर्तन, जिनमें विभिन्न स्तरों..... प्रौद्योगिकी, संस्थाओं विचारधारा व मूल्यों में परिवर्तन शामिल है।[226] पश्चिमीकरण के महत्त्वपूर्ण हिस्से मानवतावाद तथा तार्किकवाद हैं जिसके फलस्वरूप भारत में अनेक संस्थात्मक व सामाजिक श्रृंखलाबद्ध सुधार हुए।[227]

पश्चिमीकरण में वृद्धि संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को धीमा नहीं करती अपितु दोनों साथ-साथ चलती रहती हैं और कुछ हद तक पश्चिमीकरण में वृद्धि संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करती है। उदाहरण के लिये, डाक सुविधायें, रेलें, बसें व समाचार संचार भारत में पश्चिमी प्रभाव के फल हैं जिनके कारण पहले की तुलना में अब अधिक संगठित धार्मिक तीर्थयात्रायें, बैठकें व जातिगत एकता आदि संभव हो पाई हैं।[228]

वैश्वीकरण के दौर में भी भारतीय परम्परा में पुरुषार्थ चतुष्टय के सिद्धान्त के आधार पर बहुत से लोग अपना जीवन यापन कर रहे हैं। आज के युग के अनुरूप इनकी पुनर्व्याख्या अपेक्षित होगी। जहाँ धर्म को

---

[222] वही, 2/17/10

[223] http://hi.wikipedia.org/wiki/वैश्वीकरण

[224] http://www.maketradefair.com

[225] *Social Change in Modern India*, p. 6.

[226] *A note on Sanskritization and Westernization" in caste in Modern India and other Essay,* p. 55.

[227] *भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण,* पृ. 31.

[228] वही, पृ. 31.

प्राचीनकाल में आदर्शों का पिटारा अथवा नैतिकता का पुंज माना जाता था, आज भी भारतीय समाज और राजनीति में धर्म को प्रधानता दी गई है, यद्यपि संविधान धर्मनिरपेक्ष भारत की कल्पना करता है। धर्म का संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के तहत पुनर्पाठ किया गया है। आज धर्म सम्प्रदाय के रूप में विकसित हो गया है। एक धर्म के मानने वाले दूसरे धर्म के मानने वालों से धर्म के मामले में उलझ जाते हैं तथा परस्पर लड़ाई, झगड़ा, दंगा-फसाद इत्यादि को अंजाम देते हैं।

धर्म को प्राचीनकाल में कर्त्तव्य का पर्याय माना जाता था तथा उसी के अनुसार लोग व्यवहार करते थे। आज पुनः इसी प्रकार के धर्म की आवश्यकता समाज में आवश्यक हो रही है। वैश्वीकरण के दौर ने रिश्तों को कमजोर बनाया है। आर्थिक विकास की प्रतिस्पर्द्धा ने मानवीय मूल्यों को नष्ट कर दिया है। भारतीय समाज में कुटुम्ब अर्थात् संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। चारित्रिक निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास, जिसका आधार दादा-दादी अथवा नाना-नानी की कहानियाँ हुआ करती थी, उनका स्थान रिक्त है। ये सब बाजारवादी शिक्षा में प्राप्त करना मुश्किल है। जब पुत्र पिता को आघात पहुँचाता है, तो पिता के मुख से अनायास ही राम जैसे पुत्र की चाह बलवती होती है, जिसने पिता की आज्ञा पर समग्र राज्य छोड़कर वनवास को भी सहर्ष स्वीकार कर लिया। सीता जैसी पत्नी, जो स्वयं अनेक कष्टों को सहन करते हुए भी, अपनी संतान को योग्य बनाने को तत्पर है। नित्य-प्रति के जीवन में चोरी, लूट, बलात्कार, हत्या इत्यादि अमानवीय घटनाओं ने पुनः धर्म की शरण में जाने की ओर विवश किया है, जिससे मर्यादित जीवन जिया जा सके। जहाँ जिओ और जीने दो का आदर्श साकार हो सके।

वैश्वीकरण के दौर में जहाँ विश्वस्तर पर अर्थ के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन आये हैं, उनसे आज अर्थ पुरुषार्थ की प्रासंगिकता की पडताल जरूरी हो गई है। जहाँ प्राचीनकाल में भारतीय दृष्टिकोण अर्थ को सामाजिक दायित्वों के निर्वाह का साधन रूप स्वीकार करता था, वहीं आज यह सम्पन्नता तथा समृद्धता का आधार बन गया है। अमीरी-गरीबी के स्तर तथा किसी भी देश के विकसित तथा अविकसित होने का आधार अर्थ ही है। फोर्ब्स पत्रिका के अमीरों की सूची में प्रत्येक व्यक्ति अपना नाम देखना चाहता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्वीकरण मुख्य रूप से अर्थशास्त्रीयों, व्यापारिक हितों, और राजनीतिज्ञों के नियोजन का परिणाम है जिन्होंने संरक्षणवाद और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण में गिरावट के मूल्य को पहचाना। उनके काम का नेतृत्व ब्रेटन वुड सम्मेलन और इस दौरान स्थापित हुई कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं जैसे पुनर्निर्माण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैंक (विश्व बैंक), और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने किया, जिनका उद्देश्य वैश्वीकरण की नवीनीकृत प्रक्रिया का निरीक्षण कर इसको बढ़ावा देना और इसके विपरीत प्रभावों का प्रबंधन करना था।

वैश्वीकरण में तकनीक के आधुनिकीकरण के कारण व्यापार, और व्यापार वार्ता दौर की लागत को कम कर दिया, मूल रूप से शुल्क तथा व्यापार पर सामान्य समझौते (GATT = General Agreement on Tariffs and Trade) के तत्वावधान के अंतर्गत ऐसा हुआ है जिसके चलते कई समझौतों में मुक्त व्यापार (free trade) पर से प्रतिबन्ध हटा दिया गया। उरुग्वे वार्ता (Uruguay Round 1984 से 1995) में एक संधि हुई, जिसके अनुसार WTO व्यापारिक विवादों में मध्यस्थता करेगा और व्यापार के लिए एक एकीकृत मंच उपलब्ध कराएगा।

जब वैश्विक स्तर पर ऐसे सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं तथा संधियों का समायोजन हो रहा है, ऐसे समय भारतीय समाज पर परिवर्तन पड़ना स्वभाविक है। भारतीय समाज में अर्थ को महत्त्व दिया गया है। रामायण के बालकाण्ड के एक श्लोक से पता चलता है कि क्षत्रिय ब्राह्मण के उपदेश के अनुकूल आचरण करता था। वैश्य क्षत्रियों की आज्ञा का पालन करते थे और शूद्र अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए प्रथम तीन वर्णों की सेवा किया करता था।[229] रामायण के वैचारिक परिदृश्य में परिवर्तन परवर्ती काल में हुआ।

---

[229] *वाल्मीकीरामायण*, 1/6/19

मनुस्मृति ग्रन्थ में तो मनु ने प्राचीन कालीन भारत में शूद्रों के धन संचय करने पर रोक लगा दी। उनका तर्क था कि सामर्थ्यवान होने पर भी शूद्र को धन का संचय नहीं करना चाहिये। क्योंकि उनके द्वारा धन संचय होने पर वे ब्राह्मणों के लिये उपद्रव खड़ा करते हैं।[230]

अर्थ की यह अवधारणा वर्णव्यवस्था की संरचना के अनुसार थी, क्योंकि उस समय समाज में ऐसी व्यवस्था थी। किन्तु वैश्वीकरण के दौर में प्रतियोगिता तथा उद्यमिता कौशल के आधार पर कोई भी पूंजीपति बन सकता है। किसी का भी किसी पर कोई बंधन नहीं है। रामराज्य के गांधीवादी आदर्श ने आर्थिक समानता पर आधारित शासन व्यवस्था के निर्माण की परिकल्पना ने कई वर्षों तक भारतीय राजनीति को उद्वेलित किया।

वैश्वीकरण के दौर में बाजारीकरण तथा दिखावे की संस्कृति के विकास के कारण काम पुरुषार्थ का लक्ष्य बदल गया है। प्राचीन काल में जहाँ इसका आशय संतानोत्पत्ति के लिये गृहस्थों के एक कर्त्तव्य मात्र से लिया जाता था, आज भौतिकवादी चका-चौंध में यह काम-वासना तथा यौन सम्बन्धों का पर्याय मात्र बनकर रह गया है। आज वैश्वीकरण के दौर में जहाँ सिनेमा, साहित्य, मीडिया, संचार तथा इन्टरनेट के माध्यम से व्यक्तियों को मिलाना आसान कर दिया है, वहीं मानवीय रिश्तों को दूर कर दिया है। काम जहाँ पहले दो आत्माओं का मिलन माना जाता था, आज मात्र दो शरीरों का मिलन मात्र बनकर रह गया है।

रामायण से पता चलता है कि काम में चरित्र का महत्त्वपूर्ण स्थान था। पति अपनी पत्नी के प्रति तथा पत्नी अपने पति के प्रति नैतिक तथा चारित्रिक रूप से सबल है तो पारिवारिक मर्यादायें बनीं रहती थी। सामान्य जनता तथा अपनी प्रजा को विश्वास दिलाने के लिये राम ने सीता की अग्निपरीक्षा ली।

मोक्ष का सिद्धान्त केवल मात्र विश्वविद्यालयी स्तर पर बहस का विषय बनकर रह गया है। वैश्वीकरण के दौर में प्रोफेसर तथा शोधार्थी मोक्ष की अवधारणा पर विचार विमर्श कर इसको 'इन्टैलुक्चल' स्तर पर जीवित किये हुए हैं। ऐसा नहीं है कि मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक मुमुक्षु आज नहीं है, किन्तु यह भी सत्य है कि इस निवृत्ति के मार्ग पर कोई विरला ही आरूढ होता है।

वैश्वीकरण के दौर में रामायण के पुरुषार्थ चतुष्टय का विवेचन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि वर्तमान सन्दर्भों में भी भारतीय सामाजिक जीवन का जुड़ाव पुरुषार्थ चतुष्टय के साथ है। रामायण में इन चारों पुरुषार्थों का मूल आधार धर्म को बतलाया गया है। सीता के मुख से वाल्मिकि ने कहलवाया है कि धर्म से अर्थ प्राप्त होता है, धर्म से सुख का उदय होता है और धर्म से ही मनुष्य सब कुछ अर्थात् मोक्ष प्राप्त करता है।[231] व्यवसायपरक शिक्षा व्यवस्था, भौतिकवादी जीवन शैली तथा भाग-दौड़ की दिनचर्या ने धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की पुरातनता के साथ नवीन व्याख्या करने के दृष्टिकोण को विकसित किया है। वैश्वीकरण के दौर में पुरुषार्थ चतुष्टय में सर्वप्रथम धर्म जिसका आशय मानव को नैतिकता का पाठ पढ़ाना था, आज लड़खड़ा रहा है क्योंकि आज नैतिकता के मायने बदल चुके हैं। अर्थ को सामाजिक दायित्वों के निर्वाह का साधन रूप जिसे भारतीय मानस स्वीकार करता था, वहीं आज यह सम्पन्नता तथा समृद्धता का आधार बन गया है। काम प्राचीन काल में जहाँ इसका आशय संतानोत्पत्ति के लिये गृहस्थों के एक कर्त्तव्य मात्र से लिया जाता था, आज चका-चौंध में यह काम-वासना तथा यौन संबंधों का पर्यायवाची बन चुका है। मोक्ष का सिद्धान्त केवल अध्ययन तक सीमित रह गया है। भारत में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया यद्यपि वैश्वीकरण के समांनातर चल रही है किन्तु इसे लोगों ने महत्त्व देना कम कर दिया है। धम्मपद में कहा गया है कि सार को सार और निःसार को निःसार जानकर सम्यक् चिंतन करने वाले व्यक्ति सार को प्राप्त कर लेते

---

[230] शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्यो धनसंचयः। शूद्रोऽपि धनमासादय ब्राह्मणानैव बाधते॥ *मनुस्मृति,* 10.129

[231] वही, 3/9/30

हैं। जो निःसार को सार और सार को निःसार समझते हैं, ऐसे गलत चिंतन में लगे हुए व्यक्तियों को सार प्राप्त नहीं होता।[232]

वैश्वीकरण के दौर में धर्म को पुनः कर्त्तव्य का पर्याय बनाने की आवश्यकता है। यदि वर्ण-व्यवस्था की संरचना में विचार करें तो राम के कर्तव्यपरायणता की तथा धर्मनिष्ठता की लोगों को जरूरत है। अपने विकास के लिये धन कमाने की आवश्यकता है किन्तु निजी स्वार्थ की पूर्ति हेतु भ्रष्टाचार, रिश्वत अथवा गैर-कानूनी कार्य करने को स्वयं ही प्रतिबंधित करना होगा। मानवीय उन्नति के लिये धन को लगाकर ही अर्थ पुरुषार्थ को प्रासंगिक बनाया जा सकता है। दिन-प्रतिदिन बलात्कार की घटनाओं तथा स्त्री को मात्र भोग तथा वासना की वस्तु समझने वाली चिन्तन परम्परा को मर्यादित काम पुरुषार्थ के द्वारा किया जा सकता है। सांसारिक आसक्तियों से परे हटकर कमल के पत्ते की भांति जल में निर्लिप्त रहते हुए मोक्ष की भावना समरसता तथा भौतिकवाद से दूर ले जाकर शांति तथा आनन्द का अनुभव कराती है।

सन्दर्भग्रंथसूची

- अष्टादश स्मृतिः, पं. मिहिर चन्द, नाग प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 1990.
- ऋग्वेद-संहिता (श्रीमत्सायणाचार्यविरचितमाधवीयवेदार्थप्रकाशसहिता) चतुर्थो भागः, सं. श्रीमत् मोक्षमूलरभट्टः, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, द्वितीय संस्करण (भारतीय), 1983.
- कौटिलीय अर्थशास्त्र, व्याख्याकार- वाचस्पति गैरोला, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2006.
- धम्मपदं, (अनु.) श्रीकन्छेदीलाल गुप्त, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.
- शब्दकल्पद्रुमः, स्यार-राजा-राधाकान्त-बाहादुर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ओफिस, वाराणसी, भाग-3, तृतीय संस्करण, सं 2024 वि.
- श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, गीताप्रेस गोरखपुर, 34वां पुनर्मुद्रण, सं. 2065, भाग 1 और 2.
- संस्कृत-हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1988.
- सिंह, आर. जी., भारतीय समाज, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, प्रथम संस्करण, 1987.
- सिहं, योगेन्द्र, भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, (अनु.) अरविन्द कुमार अग्रवाल, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2006.
- Jha, Ujjwala (tr.) A Primer of Navya Nyāya Language and Methodology (Navya Nyāya Bhāṣā Pradīpa of MM Mahesh Chandra Nyayaratna), The Asiatic Society, Kolkata, 2004.
- Srinavas, M.N., A note on Sanskritization and Westernization" in caste in Modern India and other Essay, London, Asia Publishing House, 1962.
- Srinavas, M.N., Social Change in Modern India, Los Angeles, California, 1996.
- http://hi.wikipedia.org/wiki/वैश्वीकरण
- http://hi.wikipedia.org/wiki/समाज
- http://www.maketradefair.com

[232] सारञ्च सारतो ञत्वा, असारञ्च असारतो। ते सारं अधिगच्छति, सम्मासङ्कप्पगोचरा॥ *धम्मपद*, यमकवग्गो, 12
असारे सारमतिनो, सारे चासारदस्सिनो। ते सारं नाधिगच्छन्ति, मिच्छासङ्कप्पगोचरा॥ वही, 11